पक्षधर

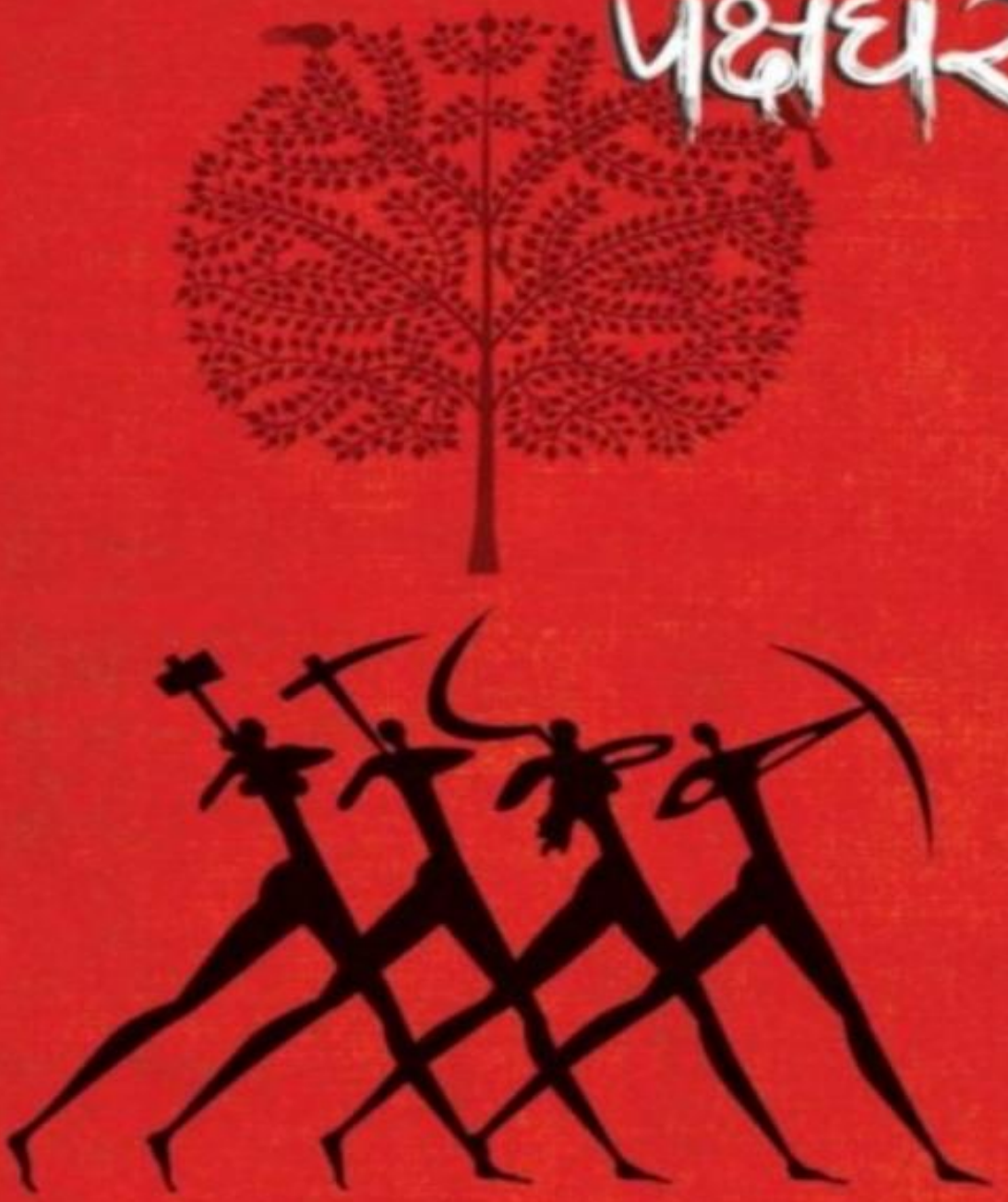

रजत जयंती अंक

आदिवासी समाज, विकास के सवाल और सामासिकता की राजनीति

अंक-25+26

संस्थापक संपादक : दूधनाथ सिंह : 1975

पक्षधर

प्रतिरोध की संस्कृति का रचनात्मक हस्तक्षेप

वर्ष : 12 संयुक्तांक : 25, 26 जुला.-दिसं., 2018–जन.-जून, 2019

संपादक
विनोद तिवारी

अतिथि संपादक
अनुज लुगुन

संपादन सहयोग
अजय आनंद
आशीष मिश्र

रजत जयंती अंक

आदिवासी समाज, विकास के सवाल और सामासिकता की राजनीति

अनुक्रम

प्रस्तावना 7
संपादकीय 11

खंड-एक : आलेख

इतिहास और मिथक

जनजातीय इतिहास लेखन की कठिनाइयाँ और जनजातीय राजवंश / **रणेन्द्र** 17
आदिवासी अलगाव का इतिहास और वर्तमान / **हरिराम मीणा** 37
भारतीय लोकतंत्र में आदिवासी समाज / **रवि श्रीवास्तव** 55
भारतीय लोकतंत्र में आदिवासी स्वायत्तता का प्रश्न / **नीरज कुमार** 65
उपनिवेशवाद के विरुद्ध आदिवासी आंदोलन एवं उनका सांस्कृतिक पक्ष / **आनन्द कुमार पटेल** 69
अश्वेत का यथार्थ / **फ्रैंज फैनन** 90
(अनु. : धर्मराज कुमार)

विकास और संघर्ष

साम्राज्यवादी शोषण का विराट प्रतीक : दामोदर वैली कॉरपोरेशन / **घनश्याम** 110
पत्थलगड़ी आंदोलन : इतिहास के बियावान जंगल में पत्थर के निशान / **विनोद कुमार** 115
टी ट्राइब्स का आदिवासी अस्मिता के लिए संघर्ष / **प्रमोद मीणा** 120
उत्तर बंगाल के आदिवासी : संस्कृति एवं राजनीति / **दीपक कुमार** 125

भाषा, साहित्य और समाज

संताली भाषा और साहित्य की त्रासदी / **वासुदेव बेसरा** 133
आदिवासी साहित्य की वैचारिक दिशा / **महेश कुमार** 139
मराठी साहित्य में आदिवासी लेखन / **वीरा राठोड** 159
नारायन : आदिवासी माटी का कथाकार / **प्रमीला के.पी.** 166
अरुणाचल प्रदेश में आदिवासी लेखन / **जमुना बीनी तादर** 170

उत्तर बंगाल के आदिवासी : संस्कृति एवं राजनीति

दीपक कुमार

उत्तर बंगाल! जिसे पूर्वी भारत का द्वार (गेटवे ऑफ़ ईस्ट) कहा जाता है। भौगोलिक रूप से यह क्षेत्र नेपाल, भूटान और बांग्लादेश की सीमा से लगा हुआ है। इस क्षेत्र में अधिकांशतः आदिवासी समुदाय के लोग रहते हैं। इस क्षेत्र के मूल निवासी लेपचा थे। लेपचा समुदाय में 'गैबो अच्योक' नाम के राजा का बड़ा सम्मान है। उनकी कहानियाँ में बार-बार उसका नाम आता है। कलिम्पोंग के गोरूबथान सब डिवीज़न में दालिमगढ़ी नाम का किला है जिसके अवशेष ही अब शेष हैं। फिर भी वहाँ के स्थानीय निवासी आज भी गैबो अच्योक को बड़े सम्मान के साथ याद करते हैं। कहा जाता है कि भोटिया राजा ने धोखे से उसे मारकर चेल नदी में फेंक दिया था। इस तरह की कई लोककथाएँ यहाँ प्रचलित हैं। इन लोक कथाओं से इतना अवश्य स्पष्ट हो जाता है कि इस क्षेत्र के पहले निवासी लेपचा ही थे। स्वयं लेपचा समुदाय के लोग मानते हैं कि वे कंचनजंघा की गोद में जन्में हैं। आज इनकी आबादी अनुमानतः एक लाख के करीब है। जिसमें से सिर्फ 35 हजार की आबादी भारत में रहती है। इनका बसाव क्षेत्र सिक्किम और दार्जीलिंग है। सन् 1780 में नेपाल के गोरखाओं ने दार्जीलिंग पर पहली बार आक्रमण किया था और 1815 तक दार्जीलिंग सहित सिक्किम को नेपाल में मिला लिया था। सन् 1816 में अंग्रेजों ने गोर्खाओं को हराकर उनसे सगौली की संधि की। जिसके तहत सिक्किम और दार्जीलिंग अंग्रेजों के नियंत्रण में आ गया। अंग्रेजों ने 1817 में सिक्किम के राजा से तितालिया की संधि के तहत सारा अधिकृत क्षेत्र उन्हें सौंप दिया। इन आक्रमणों और संधियों के फलस्वरूप लेपचाओं के बसाव क्षेत्र में बाहरी लोगों का प्रवेश हुआ। आज इस क्षेत्र में लेपचओं के इतर जो आदिवासी समुदाय रहते हैं वे सभी 18वीं और 19वीं सदी में यहाँ आकर बसे हैं।

पश्चिम बंगाल में आदिवासियों की कुल जनसंख्या लगभग 53 लाख (2011 की जनगणना के अनुसार) के आसपास है। जिसमें पुरुषों की संख्या 2649974 और महिलाओं की संख्या